वर्चअल रियॉलिटी की कथा : एक सच्ची-झूठी गाथा

डॉ. दीपक रामा तुपे
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर
(स्वायत्त)

शोध सारांशः अलका सरावगी लिखित एक सच्ची-झूठी गाथा उपन्यास में एक ऐसी कथा-गाथा है, जिसमें एक पुरुष और स्त्री का आद्योपांत संवाद है। ऐसा संवाद जो सिर्फ ई-मेल शैली में प्रस्तुत है। प्रस्तुत उपन्यास में नायक के रूप में प्रमित सान्याल नामक पात्र है, जो नायिका गाथा को अनदेखा, अनजाना, अजनबी है। पूरे उपन्यास में दोनों एक-दूसरे के जीवन को जानने की कोशिश करते हैं, मगर एक-दूसरे को मिले बिना। आदि से अंत तक कौन-झूठ, कौन-सच का आता-पता अंत तक नहीं चलता, इसलिए उपन्यासकार अलका सरावगी ने उपन्यास को एक सच्ची-झूठी गाथा शीर्षक दिया है। वर्ष 2018 में प्रकाशित एक सच्ची-झूठी गाथा□उपन्यास की नायिका गाथा की गाथा 155 पृष्ठों में समाहित हैं। ये दोनों पात्र एक-दूसरे के जीवन को उलट-पलट कर रख देते हैं और एक-दूसरे के सपनों की आवाजाही भी।

बीज शब्द : आद्योपांत, आतंकवाद, नक्सलवाद, प्रांतवाद, क्षेत्रीयवाद, वचुअॅल रियॉलिटी.

अर्थ : इक्कीसवीं सदी में हर जगह आतंकवाद, नक्सलवाद, प्रांतवाद, क्षेत्रीयवाद पनप रहा है। आदमी आदमी से कटता जा रहा है। उसे एक-दूसरे के सुख-दुःख की जरा भी कद्र नहीं है क्योंकि आतंकवादियों या नक्सलवादियों के जीने की आस्था, तर्क या सिद्धांत किसी के गिरफ्त में नहीं आते और न उन्हें कोई बदल सकता है क्योंकि किसी की जान लेने या खुद अपने ही चिथड़े उड़ने वे हर वक्त राजी होते

हैं। उनकी बातें भी एक प्रकार धोखा या छलवा लगती है। वे हर समस्या का समाधान हिंसा के माध्यम से खोजते हैं। यह गाथा ऐसी गाथा है जो अनचाही, अनचीन्ही पगडंडियों का सफर कराती है तो कई बार उन्हें ऐसी जगह पर लाकर छोड़ देती है, जहाँ से आगे जाने का कोई मार्ग न हो या सोचने की दिमाग की बत्ती भी गुल हो। इस गाथा में जोखिम है, खतरा है, दुस्साहस है, नई अनुभूतियों के साथ जीने का संकल्प है, प्रेम है, मित्रता है, लेखकी है, स्त्रीत्व है और लुकते-छिपते अर्थात् सच्चे-झूठे ख्वाब है। दरअसल "यह उपन्यास वचुर्अल रियॉलिटी में एक औरत और एक मर्द के संवाद पर केंद्रित है। औरत जो एक लेखिका है, लगातार पुरुष को जानने की बेतहाशा कोशिश कर रही है। पुरुष कभी उसके बहुत करीब आ जाता है तो कभी उससे बिलकुल अजनबी-सा लगता है। अंत तक एक अंतहीन संवाद चलता रहता है, जो बीच-बीच में उबाऊ भी हो जाता है। आखिरकार एकाएक यह संवाद खत्म हो जाता है और उपन्यास भी।"[1] प्रगति सक्सेना के आलेख का शीर्षक □उपन्यास के रूप में निराश करती एक सच्ची-झूठी गाथा□ इस उपन्यास के संदर्भ में बिलकुल समर्पक लगता है।

उपन्यास की नायिका गाथा एक झूठ पचाने के लिए सारा थिएटर सजा देती है और ई-मेल फ्रेंड प्रमित से मिलने के लिए दार्जिलिंग स्थित बागडोगरा एयरपोर्ट पर आ जाती है और प्रमित सान्याल उसे लेने नहीं आता और गाथा के दिमाग में लगातार उसके साथ हुई बातचीत के टूकड़े याद आ रहे हैं। उसका इंतजार करते हुए जिन टूकड़ों को वह याद करती जाती है उसीसे उपन्यास का घटनाक्रम बन हुआ है। उन दोनों का परिचय महज एक संयोग है। एक दिन गाथा अपने पिछली किताब की सूचना ई-मेल के जरिए सैकड़ों जाने-अजनाने लोगों को भेज देती है। तभी प्रमित सन्याल का अंग्रेजी में जवाब आता है, "मैडम, आपकी जानकारी के लिए मैं सिर्फ अंग्रेजी किताबें पढ़ पाता हूँ। इस तरह बेवजह आप लोगों के □इनबॉक्स□ में कचरा डालें, यह क्या उचित है?"[2] यही से उपन्यास में ई-मेल संवाद शुरू हो जाते हैं जो

अंत तक जारी रहते हैं। हर किसी को अपना किताब प्यारा होता है, मगर प्रमित गाथा की हिंदी किताब को कचरा कहता है, इसलिए गाथा का खून खौल जाता है और वह उसे इंग्लिश बुलडॉग कहती है। असल में प्रमित रहस्यमयी शख्स है जो वह कवि तथा लेखक है। उपन्यास की नाममात्र कल्पना करता है, मगर आरंभ नहीं। लिखना चाहता है, मगर छापना नहीं। वह नक्सली, अराजक भटकावों से घिरा एक अजनबी, बहुत ही तार्किक किस्म का आदमी है। गाथा की उसके साथ अक्सर बहस होती रहती है, जो जीवन और रचना पर केंद्रित है। इस बातचीत में कई गांठें बनती-बिगड़ती हैं। प्रमित सान्याल के मुताबिक वह उम्र सात साल में अनाथ हो जाता है और अनाथालय में पला-बड़ा है। भूखा, डरा हुआ, अकेला, बेसहारा बच्चा है। कई तरह के उत्पीड़न झेलता और उत्पीड़न से बचता हुआ प्रमित अपना खुद का एक जीवन दर्शन बनाता है, जिसमें उम्मीद कम और आक्रोश ज्यादा है। वह हर वक्त दूसरों को मिटाकर अपनी दुनिया बनाने पर तुला हुआ है। जिस प्रकार हर मिश्रित नस्ल के बच्चे को अपनी दुनिया बनानी पड़ती है उसी प्रकार उसने अपनी जगह बनानी पड़ती है।

सात साल की उम्र में ही वह अनाथ हो जाता है। बातों में अंतसयाना या अतिसयाना है। वह बच्चा-सा है, जोकि गाथा के बेटे की उम्र का है। वह बचपन में सिलीगुड़ी, रायपुर, बेंगलुरु, कलकत्ता के मकानों में रहता है। उसे वह खंडहर मानता है; स्मृतियों का, सपनों का, बहुत-सी बीती बातों का, जिसमें रहना उसे अच्छा लगता है, मगर बाद में वह खुद कमाकर अपनी छत बनाता है। वह मनुष्यता का एक नमूना तो है, मगर सर्कस की जोकर की तरह। दरअसल उसका जन्म उत्तर कलकत्ता स्थित एक साधारण भाड़े के घर में हुआ है। उसके पिता बंगाली-हिंदू थे और माँ जर्मन-क्रिश्चियन थी। इसलिए वह सोचता है कि उसकी मातृभाषा अंग्रेजी है। उसके पिता चाय बागान में मैनेजर थे। दरअसल उसे बहुत माँएँ हैं, जो उससे बहुत प्यार करती थीं। जर्मन माँ, बंगाली माँ, ट्राइबल यानी आदिवासी माँ। पिता ने

उसे हर तरह की माँ ला दी थी। जैसे छोटे बच्चे के पास हर किस्म की गुड़ियाँ होती है उसी प्रकार प्रमित के पास हर प्रकार की माँ थी, जिसमें रशियन, जर्मन, इंडियन, ट्राइबल आदि शामिल हुआ करती थी। हर माँ उसे अपना ही बेटा होने की चाहत रखती है, मगर कुछ माँ ने उसे अपाहिज बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

दूसरी तरफ एक लेखिका गाथा है, जिसके भीतर कई तरह की स्मृतियाँ जाग उठाती हैं। उसका अरेंज्ड मैरेज हुई है। शादी, बच्चे, संयुक्त परिवार सबकुछ वैसा ही है जैसे आमतौर पर इस देश में एक मध्यवर्गीय हिंदू लड़की के साथ होता है। वह अपनी सास यानी सीता माँ के कठोर अनुशासन में ससुराल में रहती है। वह अपने लेखन को लेकर सीरियस है। वह हत्या को सही माननेवालों से सहमति नहीं जताती। अपने सनकीपन और आवारापन के कारण ई-मेल फ्रेंड प्रमित सन्याल से मिलने आती है। जब पति उसे मदद करना चाहता है तब वह झूठ बोलती है। "गाथा सनकीपन, पागलपन में इस तरह का झूठ बोलते हुए एक क्षण के लिए बुरी तरह डर लगता है। कौन जाने सचमुच प्रमित सान्याल इस दुनिया में ही न हो। उस दिल एक अज्ञात दुख से भर जाता है। यह सिर्फ वही जान सकती है कि किसी अजनान, अनदेखे व्यक्ति के लिए वह इतने गहरे समुद्र में कैसे उतर सकती है। किसी को बता नहीं सकती। कोई कैसे समझेगा? इस सदी ने आदमी से उसके आदमी होने का हक ही छीन लिया है।"[3] उसे किसी खूनी, चोर, पागल, नक्सली, पुलिसमैन या किसी अनजान आदमी से मिलने की क्या जरूरत है। गाथा ने पूरे सात घंटे के इंतजार के बाद वापस लौटने का टिकट खरीद लिया है। "छोटे से एयरपोर्ट पर सब उसे जैसे जान गए हैं। टिकट काउंटर पर बैठे आदमी को भी शायद उसके लंबे इंतजार की खबर है, इसलिए वह उसे टिकट देते समय कुछ गौर से देखता है। गाथा ने कोलकाता सूचना दे दी है, अपने लौटने की। प्रोग्राम कैंसिल हो गया है, किसी की मृत्यु होने के कारण।"[4] दरअसल प्रमित सन्याल वही था, मगर वह उस दिन मुसीबत में पड़ा था, इसलिए वह गाथा को मिलने नहीं आया था ताकि वह खतरे

में न पड़ जाए। अवैध संतान होने के नाते गाथा को उसके प्रति सहानुभूति है। वह किसी को नहीं मगर गाथा को सच बताता है। स्वयं उसी के शब्दों में-"यह सिर्फ मैं ही हूँ जिसने तुमसे यह सब साझा कर अपने साथियों से दगा किया है। उन लोगों से, जिनके बिना मैं सड़क पर घूमते लावारिस कुत्ते से ज्यादा कुछ नहीं होता। हो सकता है ऐसा करने की मुझे कोई बड़ी कीमत भी चुकानी पड़े।"[5] शायद उन दिनों की बीमारी से पिता और दूसरी माँ बे्रन मलेरिया की बीमारी से मर गए थे। एक भूखा मरता बच्चा, जिसके बाल तक गिरने लगे थे और पाँव टेढ़े होने लगे थे। बहुत मुश्किल से वह बच जाता है। इसी कारण वह किसी एक देश का नागरिक नहीं रहता है। वह नरक समान एवं जेलनुमा स्कूल में पढ़ता है। "मैं तो मुफसिल लोगों के लिए बने स्कूल में पढ़ता था। असल में वह स्कूल ड्राप-आउट यानी भगोड़े, आवारा, निकम्मे किशोरों के लिए था। कुछ-कुछ जेल जैसा।"[6] उसकी दुनिया में एक कूंग-फू मणिपुरी टीचर था; उसे पढ़ाने के लिए। वह पढ़ा-लिखा साधारण शख्स है। वह दुनिया की तमाम किताबें पढ़ा हुआ है। किसी विदेशिनी प्रेम से उसने खो दिया है। वह अंदर-बाहर दोनों तरफ से बेदखल है, अकेला है, जिसे हर वक्त अकेलापन सताता है। वह कब्रगाह में सोता था, जहाँ गाँव के लोग उसे अवधूत कहते थे। जिस प्रकार अवधूत को सबकुछ मालूम होता है भूत, वर्तमान और भविष्य का उसी प्रकार प्रमित को मालूम था। अपने साथी यानी एक दोस्त कबीरु से उसने अपने बाहों में मरते हुए खोया है, जिसे वह कभी नहीं भूलता। वह सिर्फ एक टट्टू था। किसी हादसे में वह उसके बगल में मरा पड़ा था। वह उसके भारी शरीर को घसीट कर ले गया था। वह उसके लिए हमेशा रोता है। प्रमित की दुनिया बहुत असुरक्षित है। उसका जीवन नफरत और हिंसा से भरा हुआ है। उसने युद्ध का रास्ता अपनाया है, मगर नए विश्वास को पाने के लिए। मृत्यु होना, अपाहिज होना आदि बातों में उसे कोई दिक्कत या परेशानी नहीं है क्योंकि उसने कटे हुए हाथ, मैदान में पड़े पाँव और मरती हुई आँखें देखी हैं। वह पांच दिन तक मरे हुए लोगों के बीच सोता रहा है।

उस दुर्गंध को वह आज तक नहीं भूला है। पिछले दस सालों से उसके दिल के घाव टीसते हैं। दुनिया में मृत्यु, दर्द, तकलीफ उसे डरा नहीं पाती। वह मानता है कि यदि दुनिया को बदलना है तो सिर्फ हिंसा के मार्ग से ही संभव है। उसे कोई भी कितनी भी बड़ी धमकी दें, मगर वह उसका जवाब मुसकराता हुआ देता है। यह गुण उसे माँ से ही विरासत में मिला है। दूसरी माँ के मुताबिक जब दूसरे बच्चे गिरने पर रोते थे उस समय वह सिर्फ मुसकराता था। उसे शासन करने वालों से, भ्रष्टाचारी, मुनाफाखोर, लूटने वालों के प्रति नफरत है। उसने हमेशा प्रेम करने की कोशिश तो की, मगर हमेशा धोखा खाया है। वह एक अलग दुनिया का ऐसा शख्स है जो भूख, प्यास और नींद की तड़प जानता था। वह समन्वयवादी संस्कृति में यकीन करता है; जिसमें सब लोग भिन्न होते हुए भी एक साथ शांति से रह सकते हैं। इससे वह एक सच्चे इन्सान के रूप में गढ़ा हुआ है। एक अंधा भिखारी उसके प्रति बहुत दयालु था, जो हमेशा एकला चलो रे□का गीत गाता था, मगर वह एक नहीं होना चाहता है।

अंत में प्रमित किसी आतंकवादी या नक्सलवादी गुट से जुड़ा हुआ है और किसी तरह की मुसीबत न आ जाए, इसलिए गाथा उसका ई-मेल ब्लॉक कर देती है। इसी कारण वह दूसरे नए ई-मेल पते से शादी का निमंत्रण पत्र भेजता है। यह देखकर गाथा खुश होती है कि प्रमित जीवन की नई राह पर चल पड़ा है। वह एक साधारण आदमी का सपना देखने लगा है। □सत्ता की बंदूक के आगे गैरबराबरी की लड़ाइयों में चीटियों की तरह मारा जाना हमारी नियति है। आज तक इतिहास में ऐसी लड़ाइयों में साख बदलाव नहीं हुआ।□गाथा की बातों से प्रमित को इन्हीं सत्य की प्रचीति आ चुकी है। इसलिए प्रमित, दीपशिखा के साथ होने वाली शादी में गाथा को आर्शीवाद देने के लिए आने की विनती करता है, मगर वह कोई परिजन में दूसरी शादी होने का बहाना बनाकर प्रमित की शादी में जाने से मना करती है क्योंकि उसे यह बात सच नहीं लगती, प्रमित उसे एहसास दिलाता है कि “मैं तुम्हें

शायद इसी तरह यकीन दिला सकता हूँ कि मैंने तुम्हें जो कुछ कहा था सच था। मैं झूठ नहीं बोल पाता। बस यही मेरी एक कमजोरी है।"[7] गाथा प्रमित को दीपशिखा पर भरोसा करने के लिए कहती है। प्रमित शरीर पर गोली के निशान है और उसकी टूटी हुई हाथ-पैर की हड्डियों के कारण दीपशिखा को कैसे यकीन दिलाए, इस बात को लेकर वह चिंतित है। इस संदर्भ में गाथा लिखती है-"प्रमित, मैं वही कथा लिखती हूँ जो सबके अंदर बनती और गायब होती रहती है। मेरी कथा में जब पाठक अपनी कथा को पहचान लेता है तो वह एक कौतुक-भरे आनंद का अनुभव करता है। यह एक तरह की मुक्ति है जो पढ़ने वाले को अपने से बाहर उड़ा ले जाती है। वहाँ से वह जीवन को फिर नए सिरे से समझ लेता है।"[8] स्पष्ट है कि यही बात उपन्यास के नायक प्रमित अपनी शादी कर जीवन को नए सिरे से समझ लेता है जो मानव जीवन का लक्ष्य भी है और उपन्यास का उद्देश्य भी।

इस बीच, गाथा एक फिल्म की तरह लंबा सपना देखती है जहाँ वह प्रमित सन्याल की शादी का कार्ड हाथ में लेकर अनजान शहर में घर-घर घूमती है, मगर शादी में दिए गए नंबर का मकान किसी गली में कहीं नहीं मिलता। हर कोई अगली गली का घर बता देता है और खोजते-खोजते गाथा को एक घर दिखाई पड़ता है; जहाँ फूल-मालाएँ लगी हैं, दरवाजा खुला है, विवाह की वेदी बनी हुई है। सब मेहमान बातें करते खाना खा रहे हैं। एक औरत से वह पूछती है दूल्हा-दुल्हन कहाँ है तो वह औरत हँस पड़ती है। वह बगले वाले से कहती है तो वह भी हँसने लगते हैं। सारे लोग फुसफुसाते हैं और उसे देख-देखकर ठहाके लगाते एक-दूसरे पर गिरे जा रहे हैं। इतने में गाथा की नींद खुल जाती है। उसे वह खुद का अपमान लगता है। सपना देख की आँखें अंधेरे में डबडबा जाती है। जो सपना गाथा को आया था; वही सच हो जाता है। वेदी खाली रह जाती है। उन लोगों ने शादी के दिन सुबह फोन करके प्रमित से न जाने क्या-क्या जानना चाहा और उन्होंने शादी करने से मना कर दिया। इसलिए प्रमित गाथा से कहता है-"तुम मेरे लिए दुःखी मत होना। मैं

दीपशिखा से प्रेम नहीं करता। मैं खाली उसका उपयोग कर रहा था अपने स्वार्थ के लिए।"[9] स्पष्ट है कि वर्चुअल रिश्तों में स्वार्थ नजर आता है। इन रिश्तों में संवाद तो होता है, मगर कितना सच और कितना झूठ इसका आतापता ही नहीं चलता।

दरअसल यह उपन्यास महज एक स्त्री और पुरुष के बीच इंटरनेट संवाद तक ही सीमित है। इसलिए उसे उपन्यास से बेहतर एक अच्छा नाटक कहा जा सकता है। उपन्यास में न कोई कहानी है और न कोई खास नायक। जबकि एक प्रसंगों के टूकड़े-टूकड़े हैं, जिसमें कथा ढूँढनी पड़ती है और यह भी कितना सच और कितना झूठ इस बात का पता नहीं लगता। लेखिका इसी बात का समर्थन करती हुई नजर आती है "कोई बात नहीं, प्रमित। हम यानी सारी दुनिया तुम्हारी सच्ची-झूठी गाथा सुनना चाहती है।"[10] सूचना प्रौद्योगिकी के युग में वर्चअल रियालिटी में बनती मित्रता और संवाद महानगरीय जीवन का अभिन्न अंग बनते जा रहे हैं, जिसका प्रमाण वर्तमान कालीन उपन्यासों में मिलता है।

निष्कर्षः

निष्कर्षता कहा जा सकता है कि वर्चअल दुनिया में संवाद ही एकमात्र साधन होते हैं-बातचीत के; जो प्रस्तुत उपन्यास की नींव है। इससे एक ऐसा वचुर्अल रिश्ता होता है। इस रिश्ते में कभी किसी से कोई भी अलग हो सकता है। यह उपन्यास असलीयत पर जबर्दस्त असर डालता है। इन रिश्तों में सच और झूठ का पता आखरी दम तक नहीं चलता। "मेरा सच मेरी हथेली की रेखाओं में भी नहीं लिखा। मैं उसे खुद नहीं पढ़ पाता। पीछे देखता हूँ तो सिर्फ धुंध है। उसमें मैं अपने सच रोज मिटाकर रोज नए सच लिखता हूँ। यही सबसे बड़ा सच है जो मैं तुम्हें अंत में बता दे रहा हूँ।"[11] वही, प्रमित का यह कथन उपन्यास की रियॉलिटी पर सवालिया निशान लगता है। खंडित-खंडित कथा संवाद, निरस और नितांत एक आयामी संवाद में न ठीक गाथा की पूरी जानकारी मिलती हैं और न प्रमित सान्याल की। इसमें नक्सलवाद के कुछ वैचारिक चिंतन बिंदु जरूर उठाए गए हैं, मगर उसमें भी न

कथासूत्र है, न असलीयत। हमारे समय के लेखन की विडंबना है कि समाज में कई पेचिदा रिश्ते, विसंगतियाँ, कुसंगतियाँ, तान-तनाव, टूटन-बिखराव, बनते-बिगड़ते संबंध होने के बावजूद एक सच्ची-झूठी गाथा जैसे उपन्यास में बहुआयामी किरदार गायब दिखाई देते हैं। यह साहित्य बनाम वर्चुअल संवाद ही कहे जा सकते हैं, न तो नाटक फॉर्म में है, न उपन्यास, न कहानी और न यथार्थ। वस्तुत: यह वास्तविक साहित्य फार्म से पलायन और सामाजिक असलीयत का अस्वीकार नजर आता है। सबकुछ काल्पनिक लगता है और आभासी भी।

- **संदर्भ ग्रंथ सूची :**

1. www.navjivani.india.com
2. अलका सरावगी, एक सच्ची-झूठी गाथा (राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण: 2018), पृ.-11
3. वही, पृ.-13
4. वही, मलपृष्ठ से उद्धृत।
5. वही, पृ.-125
6. वही, पृ.- 41
7. वही, पृ.-135
8. वही, पृष्ठ-145
9. वही, पृ.-24
10. वही, पृष्ठ-54
11. वही, पृष्ठ-155